# शून्य प्रहर का साक्षी

(कविता संग्रह)

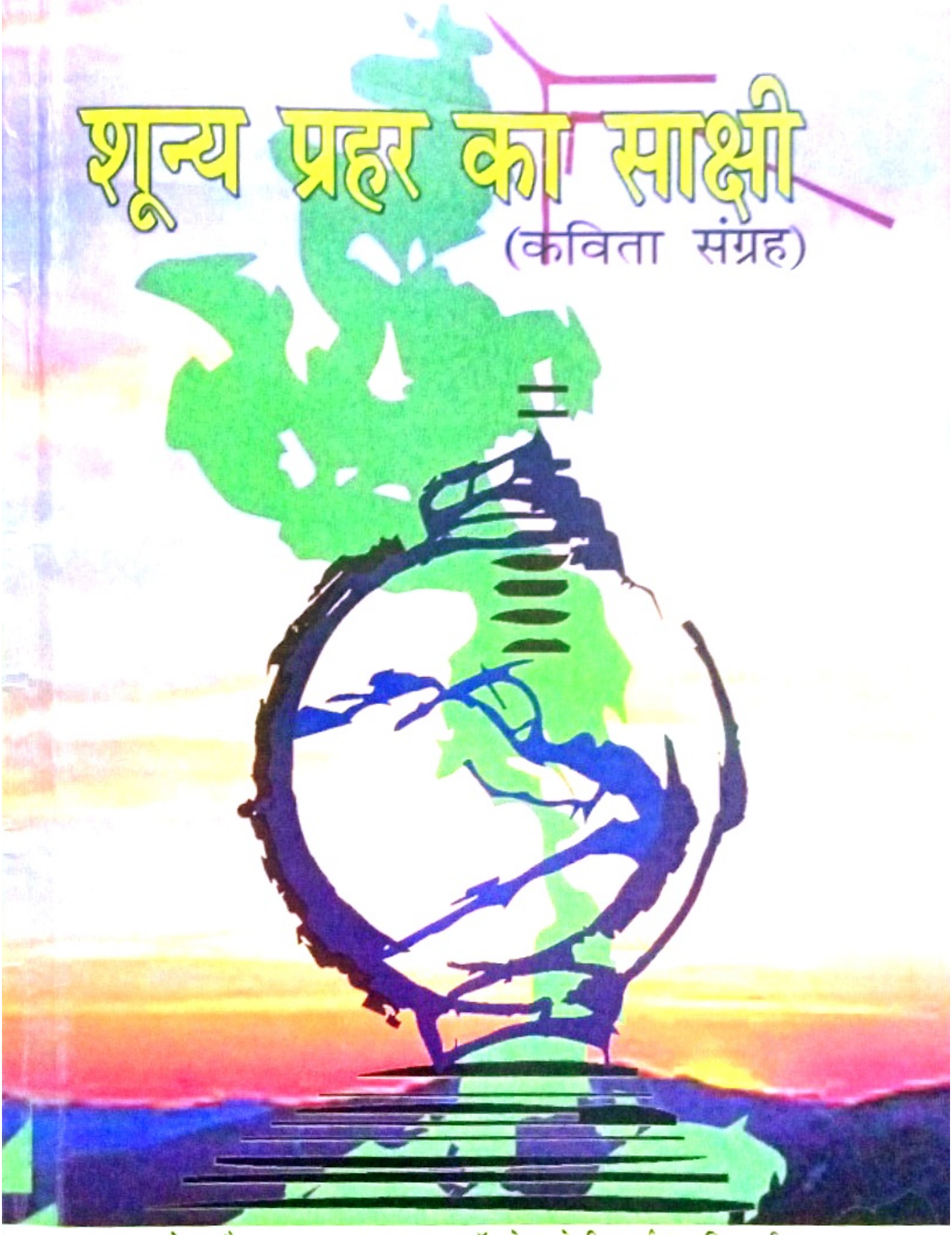

मूल : महेश पौड्याल अनुवाद : डॉ. गोमा देवी शर्मा ( अधिकारी )

# शून्य प्रहर का साक्षी

(कविता संग्रह)

महेश पौड्याल

नेपाली से हिंदी अनुवाद

डॉ. गोमा देवी शर्मा (अधिकारी)

SUNYA PRAHAR KA SAKSHI (A WITNESS OF THE ZERO HOUR)
*A collection of poetry by Mahesh Poudyal in Nepali and translated by Dr. Goma Devi Sharma (Adhikari) in Hindi, Publisher : Gorkha Jyoti Prakashan, Koubrulaikha, Manipur, India.*

Price : 100 (INR)

शून्य प्रहर का साक्षी

विधा : कविता

अनुवादक : डॉ. गोमा देवी शर्मा (अधिकारी)

सर्वाधिकार : अनुवादक

प्रकाशक : गोर्खा ज्योति प्रकाशन, कौब्रुलैखा, पो : मोटबुंग, मणिपुर : 795107, सम्पर्क : 7002840093

प्रकाशन काल : अप्रैल, 2022

मुद्रण : अधिकारी कम्प्यूटर वर्क्स, सातगाँव, गुवाहाटी

आवरण : जयराम तिमल्सिना

मूल्य : 100/-

**ISBN : 978-93-84146-97-9**

# भूमिका

'शून्य प्रहर का साक्षी' मेरे समक्ष है और मेरी एक आँख में उत्सुकता है तो दूसरी में गहन वेदना का हरहराता सागर! स्पष्ट कर दूँ कि उत्सुकता रचनाओं के आगे बढ़ने के साथ निरंतर बढ़ती जा रही है तो वेदना रचनाओं की गहनता की प्रतिध्वनि है।

'शून्य प्रहर का साक्षी' 108 संवेदनशील रचनाओं की ऐसी लड़ी है जो पाठक को अपनी संवेदनाओं से बाँधकर क्रमशः निरंतरता से आगे बढ़ती हैं। इन रचनाओं में प्रेम है जो यादों में सिमटते हुए 'नये सपने' बनाता है। ये सपने जो आँखों में उगते हैं, उन्हीं में पलते हैं, कभी बूँद-बूँद करके टपक जाते हैं तो कभी आँखों में ही ठिठक जाते हैं, कभी चकनाचूर भी होते हैं तो चुभते भी रहते हैं और बहुत से प्रश्नों को लेकर कहानियाँ बुनते रहते हैं।

छोटी किन्तु प्रभावी रचनाओं का यह संसार कभी किसी पर्वत-शृंखला पर ले जाता है तो कभी किसी गाँव के सपने लेकर शहर में आ खड़ा होता है। इस रचना-संसार की अधिकांश रचनाओं में 'आँखों' के चित्र वेदना से भर देते हैं। सत्य यह है कि आँखों में समुंदर है तो सृष्टि भी! आँखें सारे भेद खोल देती हैं। प्यार, स्नेह, ममता, भूख, गरीबी, अमीरी, वासना-किसी भी प्रकार का दुराव-छिपाव नहीं कर पाती हैं आँखें! अंतर में

सच कहूँ तो ये रचनाएँ मुझे बोलती, सार्थक, संदेशयुक्त रचनाएँ लग रही है।

डॉ. गोमा देवी शर्मा निश्चय ही प्रशंसा की पात्र है कि उन्होंने इतनी सुंदर व सुगठित रचनाओं को हिंदी-साहित्य के प्रांगण में सजाया और इतनी सुंदरता से इन्हें अनूदित किया कि ये अनुवाद न रहकर मूल हिंदी की प्रतीत होती हैं। इन कविताओं की भावनाएँ, संवेदनाएँ मन पर दस्तक देती हैं, इन्हें पढ़ने व चिंतन करने के लिए बाध्य करती है।

भाषाओं का आदान-प्रदान संस्कृति को समृद्ध बनाता है। डॉ. गोमा ने इस काम को अंजाम देकर साहित्य की सेवा में अपना योगदान दिया है जिसके लिए मैं उनको अशेष साधुवाद प्रेषित करती हूँ।

पूर्ण विश्वास है कि ये रचनाएँ पाठकों के मन तक पहुँचेंगी तथा हिंदी साहित्य-जगत में इनका स्वागत किया जाएगा!!

अनेकानेक शुभकामनाओं सहित

**डॉ. प्रणव भारती**
अहमदाबाद
3 अप्रैल 2022

*(डॉ. प्रणव भारती एक वरिष्ठ उपन्यासकार, कहानीकार, अनुवादक, पटकथा लेखिका के साथ राही रैंकिंग में विश्व के 100 हिंदी लेखकों में शामिल व्यक्तित्व है। आप गुजरात की रहने वाली है।)*

# अनुवादक की भूमिका से

छायावादी कविता के महान स्तंभ जयशंकर प्रसाद ने कविता को सत्य की अनुभूति कहा है। प्रबुद्ध समालोचक रामचंद्र शुक्ल इसे जीवन की अनुभूति मानते हैं। कविता हृदय की गहराई से निकले भावों का शाब्दिक परिणाम होती है, जो भाषा का बाना धारण कर एक अलौकिक रूप धारण कर लेती है। इसमें आंतरिक एवं बहिर्जगत दोनों की बराबर साझेदारी होती है।

जब मैंने सामाजिक संजाल में पहली बार महेश पौड्याल रचित कविताएँ पढ़ी तो मुझे इनमें आम कविताओं से भिन्न एक अलग भावभूमि दिखाई दी। मैं रोज नए अपडेट पढ़ने लगी। तब से इनके प्रति एक लगाव सा हो गया। जब इन रस के प्यालों ने नेपाली भाषा में **शून्य प्रहरको साक्षी** संग्रह का आकार ग्रहण किया तो मेरे मन में इसे हिंदी पाठक जगत तक पहुँचाने की तीव्र इच्छा ने जन्म लिया। इन कविताओं में पाठकों को कवि की अद्‌भुत कल्पनाशक्ति के साथ मानव जीवन की आंतरिक एवं बहिर्जगत की साझेदारी के दर्शन होते हैं। कुछ कविताएँ संपूर्ण सचेतनता पर आधारित, लोक कीर्ति प्रेरित होती हैं और कुछ स्वत: स्फूर्त, वन फूलों, नदी के उद्दाम प्रवाह या झरनों के समान होती हैं। पौड्याल की कविताएँ स्वत: स्फूर्त हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। वेदों की ऋचाओं, सूक्तियों के समान अर्थपूर्ण, शब्दों का मितव्यय, जीवन जगत का गहरा बोध, अतिशय वेदना की गहराई, करुणा, मानव वृत्ति का गहरा विश्लेषण, सांस्कृतिक बोध, अद्‌भुत बिंबात्मक अभिव्यक्ति, मिथकों

का सफल प्रयोग, पाश्चात्य एवं पूर्वीय विचार एवं शैली का समागम, लघु आकार, जनभाषा में अभिव्यक्ति आदि इन कविताओं की विशेषताएँ हैं।

आज के मनुष्य के पास कहने को अधिक और सुनने, पढ़ने का धैर्य कम होता है। हम पढ़ते-पढ़ते जल्दी ही ऊब जाते हैं। **शून्य प्रहर का साक्षी** इसका अपवाद है। इसमें संकलित कविताओं में पाठकों को बाँधे रखने की एक चुंबकीय क्षमता है। इनमें यत्र-तत्र एक आम इन्सान और उसके जीवन के विविध रंग नजर आते हैं। हर परिस्थिति अपनी भोगी हुई सी लगती है। इनमें कहीं हमारे गुजरे अतीत की पदचाप सुनाई देती है तो कहीं वर्तमान जीवन की छाप। अधिकांश कविताओं में पाठक अपना ही प्रतिबिंब देखता है। कविताओं को पढ़ते वक्त पाठक एक पल को भी ऊबता नहीं है अपितु अगली कविता पढ़ने की उत्सुकता आद्यांत बनी रहती है। इन्हें पढ़ने बाद पाठक को ऐसी अनुभूति होती है कि जैसे उसने बहुत दिनों के बाद कोई लजीज खाद्य खाया है। गागर में सागर भरने की उक्ति को चरितार्थ करने वाली हुई पौड्याल की कविताओं में निहित इन्हीं गुणों से अभिभूत होकर मैंने इन्हें हिंदी में अनुवाद करने का प्रयास किया है। मेरा प्रयास कितना सफल रहा है, इसका मूल्यांकन हिंदी के विज्ञ पाठकवृंद पर छोड़ती हूँ। फिलहाल 108 कविताएँ संकलित **शून्य प्रहर का साक्षी** संकलन आपके हाथों में समर्पित कर रही हूँ।

सादर!

**डॉ. गोमा देवी शर्मा** (अधिकारी)

गुवाहाटी, असम

10 अप्रैल 2022

# विषय—सूची


| | | |
|---|---|---|
| 1. | गंगा | 13 |
| 2. | श्रमिक की कविता | 14 |
| 3. | कॉच, ओस और प्रिया | 15 |
| 4. | बोझ | 16 |
| 5. | बच्चों का खेल | 17 |
| 6. | सम्राट और बच्चे | 18 |
| 7. | संविधान | 19 |
| 8. | पहाड़ और हम | 20 |
| 9. | सपने | 21 |
| 10. | जुगनू | 22 |
| 11. | मानव और पतिंगा | 23 |
| 12. | प्रेम का उत्सव | 24 |
| 13. | यादें | 25 |
| 14. | जीवन और मृत्यु | 26 |
| 15. | काव्य सरोवर | 27 |
| 16. | बेचारी जिंदगी | 28 |
| 17. | बिखरने के बाद | 29 |
| 18. | आईना | 30 |
| 19. | ऑसू | 31 |
| 20. | सुई | 32 |
| 21. | नया सपना | 33 |
| 22. | पुल | 34 |
| 23. | जन्मदिन | 35 |
| 24. | जल्लाद | 36 |

| | | |
|---|---|---|
| 25. | आँखें | 37 |
| 26. | अश्वत्थामा | 38 |
| 27. | समुद्र | 39 |
| 28. | जमीन | 40 |
| 29. | हिसाब-किताब | 41 |
| 30. | दो टुकड़े चाँद के | 42 |
| 31. | बिटिया | 43 |
| 32. | दृष्टिकोण | 44 |
| 33. | आँसू और तुम | 45 |
| 34. | वसंत | 46 |
| 35. | बादलों का समंदर | 47 |
| 36. | सृष्टि का लय | 48 |
| 37. | अनुमति | 49 |
| 38. | शरीर की भाषा | 50 |
| 39. | सीमा | 51 |
| 40. | स्वाभिमान का बोझ | 52 |
| 41. | वर्षा और प्रेम | 53 |
| 42. | रहस्य | 54 |
| 43. | बुद्ध और मैं | 55 |
| 44. | एक रस | 56 |
| 45. | आँधी | 57 |
| 46. | चाँद तारों का देश | 58 |
| 47. | प्रेम की कविता | 59 |
| 48. | पहाड़ का चिराग | 60 |
| 49. | भूगोल | 61 |
| 50. | पानी और सपने | 62 |
| 51. | धरहरा | 63 |
| 52. | परिवर्तन | 64 |

| | | |
|---|---|---|
| 53. | जीवन के फूल | 65 |
| 54. | स्मृति में गॉव | 66 |
| 55. | संबंध | 67 |
| 56. | जिंदगी का पर्यटन | 68 |
| 57. | स्वीकारोक्ति | 69 |
| 58. | धैर्य | 70 |
| 59. | शहर के पड़ोसी | 71 |
| 60. | सत्य-समर | 72 |
| 61. | तानाशाह की लाश | 73 |
| 62. | इंडिया गेट | 74 |
| 63. | टिमटिमाते चिराग का सपना | 75 |
| 64. | परिवर्तन की कहानी | 76 |
| 65. | युद्ध और मुस्कान | 77 |
| 66. | ऐसे ली करवट समय ने | 78 |
| 67. | पीड़ा | 79 |
| 68. | वसंत, फूल और हम | 80 |
| 69. | पानी: दो अनुभूतियॉ | 81 |
| 70. | ब्रह्मपुत्र | 82 |
| 71. | तारे और ऊँचाई | 83 |
| 72. | दूरी | 84 |
| 73. | अनुरोध | 85 |
| 74. | बूँद | 86 |
| 75. | धुन | 87 |
| 76. | अकेलापन | 88 |
| 77. | भार | 89 |
| 78. | अंतिम युद्ध | 90 |
| 79. | अंधेरे की फसल | 91 |
| 80. | मेरी-उसकी गौरैयॉ | 92 |

| | | |
|---|---|---|
| 81. | विजेता | 93 |
| 82. | धरती | 94 |
| 83. | सपनों की वैधानिकता | 95 |
| 84. | प्रश्न | 96 |
| 85. | मैं तुमसे प्रेम करता हूँ | 97 |
| 86. | कपास | 98 |
| 87. | भूस्खलन | 99 |
| 88. | जीवन के माली | 100 |
| 89. | पटाक्षेप | 101 |
| 90. | मुस्कान की खेती | 102 |
| 91. | उम्र | 103 |
| 92. | गृह-कलह | 104 |
| 93. | गहराई | 105 |
| 94. | लालसा | 106 |
| 95. | सत्य कथा | 107 |
| 96. | शहीद की विधवा | 108 |
| 97. | अभिलेख | 109 |
| 98. | हक | 110 |
| 99. | दृष्टि | 111 |
| 100. | दीवाली और सपना | 112 |
| 101. | हार-जीत | 113 |
| 102. | जाति | 114 |
| 103. | आज का दिन | 115 |
| 104. | मानवता | 116 |
| 105. | चाँद | 117 |
| 106. | ध्यान | 118 |
| 107. | आँखों का प्रेम संवाद | 119 |
| 108. | सबूत | 120 |

# 1. गंगा

घुमड़ती वेदनाओं से जब
हिमालय का कंठ अवरुद्ध होता है
तब एक गंगा का जन्म होता है।
गंगा की दास्तान को शहरों में बेचकर
कोई विमान की सवारी करता है।
विमान का धुआँ पुत जाता है
गंगा के चेहरे पर
तब अदृश्य एक तिलस्मी कथा बन जाती है देवनदी
फिर बिकते हैं इस कथा की प्रतियाँ
देश-विदेश के शहरों में
फिर उड़ान भरते हैं
और विमान
धुएँ का गुबार फेंकते हुए
गंगा के ऊपरी आसमान पर।

* * *

# 2. श्रमिक की कविता

खुले मैदान में आयोजित कवि गोष्ठी में
कविवर बाँच रहे थे श्रमिक की कविता
पास ही बढ़ई और मजदूर
जख्मी-घिसे हाथों से ठोंक रहे थे कीलें।
कवि जी सहसा रूक गए
एक नज़र उन पर डाली
फिर चिल्लाए-
"बंद करो यह शोर!
देखा नहीं, मैं कविता बाँच रहा हूँ?"
रूक गए हाथ एकाएक श्रमिकों के।
कवि की कविता समाप्त हुई
लंबे अंतराल के बाद-
सबके प्रस्थान के पश्चात
श्रमिकों ने पुनः शुरु किया
अपना जीवन-गीत
पता नहीं कवि जी ने यह सुना या नहीं!

* * *

# 3. काँच, ओस और प्रिया

खिड़की के शीशे पर पड़ी ओस बूँदों पर
ऊँगली से अनायास तुम्हारा चित्र बनाया
और रोमांचित हो पुकार उठा, "मेनका!"
कुछ देर बाद चेतना लौट आई तो कहा-
"प्रिये!, काँच और ओस में समाहित होने पर
कमसीन दीखने वाली तुम
कभी काँच मत बनना
कभी ओस मत बनना।"

* * *

# 4. बोझ

अपनी कुरूपता से थकित मैं
एक दिन चौराहे की ओर निकला
और देखता रहा
किसी के इंतजार में बैठी किसी सुंदर युवती को
कुछ अंतराल के बाद पूछा-
"आप असीम सुंदरी हैं
अपने सौंदर्य के बारे में आपका क्या खयाल है?"
"उफ! मैं तंग आ गई हूँ"- वह अनायास बोल उठी,
"यह तो औरों के लिए है,
काश किसी की कुरूपता से बदल सकती!"

* * *

# 5. बच्चों का खेल

बच्चों का तुच्छ खेल मानकर
हमारा मजाक मत उड़ाओ, जनाब!
क्या आप नदी तट पर सत्रह बार
शादी का खेल रचाकर
स्वयं कुमार रह सकते हैं?
क्या आप दोपहर को, चौराहे पर
नंगे बदन घूम सकते हैं?

* * *

# 6. सम्राट और बच्चे

"राजा, भूख लगी!"

सुमधुर लोरी-
सम्राट पुनः एक शताब्दी निद्रालीन हो गए।

"राजा, आपका मुकुट दो न,
हम राजा-रानी का खेल खेलकर लौटा देंगे।"

राजा ने आदेश दिया,
"मंत्री! इन बच्चों को तड़ी पार कर दो
ये उत्पात मचाने आए हैं।"

* * *

# 7. संविधान

मेरी बनाई रंगीन पतंग
आकाश में उड़ती रही
ऊपर, ऊपर, और ऊपर
और अचानक डोर फिसल गई मेरे हाथों से।
पल भर में उसकी छाया भी आकाश बन गई।
पतंग पर टिकी मेरी आँखें
सूर्य की ओर बढ़ने लगीं, चाँद की ओर बढ़ने लगीं
धरती पर मैं पड़ोसियों से कहता रहा-
"देखो, उस पतंग को थामने वाले हाथ मेरे हैं!"
कुछ पल वे देखते रहे चुपचाप मुझे,
फिर एक फीकी हँसी हँसने लगे।

* * *

# 8. पहाड़ और हम

"उस बेदर्द पहाड़ ने ढँक दिया तुम्हें
इस बेअदब पहाड़ ने रोक लिया तुम्हें!"

बस करो, प्रिये
गाली मत दो उसे।
देखो, वह भी कहाँ सुखी है?
रो रहा है फूट-फूटकर
यहाँ कृष्णा बनकर
वहाँ कावेरी बनकर।

* * *

# 9. सपने

कैसे समा पाते हैं
छेदीली टोकरियों में
भर-भरकर
गाँव में मेरे माता-पिता के सपने
जो शहरों में
हमेशा फिसलकर गिर पड़ते हैं
अंधकार की गर्त से ढँकी
हमारी आँखों से
चुपचाप।

* * *

# 10. जुगनू

जुगनू!
शायद समय ही गढ़ता है हमारा अस्तित्व।
तुम दिन में चमकने का जितना भी प्रयास करो
पर तुम्हें आत्मपरिचय देने
रात का ही इंतजार करना पड़ता है।

* * *

# 11. मानव और पतिंगा

पल भर की आयु को
नाजुक पंखों में ढोकर पतिंगा
उस पार का लक्ष्य साधकार
आग की लपटों को चीर जाना चाहता है।
मरघट पर मौन बैठा मैं
शव को राख करती लपटों को देख
जीवन की क्षणभंगुरता पर कविता लिख रहा हूँ।

* * *

# 12. प्रेम का उत्सव

मानव निर्मित
मर्यादा रूपी तुच्छ लाशों की
राख से बनी दीवार को
हमने फूँक मारकर ढहा दिया
और प्रेम का उत्सव मनाया
इस बार वसंत में।

* * *

# 13. यादें

नहीं जानता था कि
यादें इतनी क्रूर भी होती हैं!
वीरान, ठंडे अंधकार के अवरोध को चीरकर
आती हैं जिगर तक,
बार-बार झकझोरती हैं, और
दिखाती हैं घावों का तांडव
और कहती हैं, "अभी रात बाकी है।"

* * *

# 14. जीवन और मृत्यु

सदा चूल्हे में
जीवन पकाने वाली आग ने
एक दिन घर को ही लपेटे में लेकर
किसी की जान ले ली।
जब सुना इस खबर को
तो बात समझ में आई-
जीवन और मौत कितने करीब हैं
एक-दूजे के।
धुएँ के झीने पर्दे से विभाजित दोनों के बीच
एक ओर मस्त रहते हैं हम
और दूसरी ओर बेखबर।

* * *

# 15. काव्य सरोवर

हजारों इंद्रधनुष ने
तुम्हारी आँखों में डूबकर जब आत्महत्या की
तुम दरबार की नर्तकी बन गई
बहादुर शाहों ने
आखों से पी-पीकर तुम्हारी हत्या कर दी।

उसी वक्त
इंद्रधनुष की आँखों से टपके आँसुओं को चुनकर
कवियों ने बनाया एक काव्य-सरोवर
जिसके भीतर आहत आकाश
झंकार बनकर आहिस्ता उतरने लगा
और जीवन-गीत में अनूदित होकर
अनंत की ओर बहने लगा।

* * *

# 16. बेचारी जिंदगी

जब तक था इस किनार पर
तब तक वह किनार पराया लगता था
उस पार पहुँच गया मैं जब
इस पार पराया लगने लगा।

मजधार में भ्रमित-दिग्भ्रमित हम
अनायस, कितनी जल्दी
इधर से उधर के हो गए!

* * *

# 17. बिखरने के बाद

नयनों के बँटने के बाद
कृष्ण ने कहा- "घर टूट गया।"
नैनों के बँटने के बाद
राधा ने कहा- "बंधन टूट गया।"

* * *

# 18. आईना

आईना
मूक बयान देता रहता है
बार-बार
हमारे अस्तित्व का
हमारे सौंदर्य का।
हम यकीन करते हैं
हर क्षण, हर दिन
सुनते हैं उसकी दलीलें
और जिंदा होने का अनभुव करते हैं।
हम जान गए हैं-
सवाक अधिवक्ता के बयान से ज्यादा
मूक आईने का बयान
हमारे लिए अधिक जीवंत होता है।

* * *

# 19. आँसू

एक बूँद हो या अविरल धार
चुभन बराबर होती है
जिगर में
आघात उतना ही लगता है।
अश्रुबूँदों के पैमाने पर
कहाँ मापी जा सकती है
हृदय की पीड़ा?

* * *

# 20. सुई

नग्नता हो तो
सुई जैसी-
वह नंगी है सर्वांग
पर युगों से
मानव की लाज ढँकने
वस्त्र सिलती आ रही है
नि:शब्द!

* * *

# 21. नया सपना

एक एक कर
जब सपने
टूटने लगे
वे- अर्थात नर और नारी
कर्णाली के तट पर पहुँचे।
पहले नर
आँखें मूँदकर
खड़ा हुआ चट्टान पर,
और पल भर में
नौका बन गया।
इंसान कैसे नौका बन सकता है-
इसकी साक्षी नारी
नवीन सपनों में पुलकित हो गई।
नौका बना पुरुष
और उसके समान
हजारों विक्षिप्तों की कहानी सुनाने का सपना-
कहानी बुनने का सपना।
इतने सपने पर्याप्त थे जीने के लिए।
नए सपनों को बगल में छुपाए
नारी घर वापस आ गई
और खिलती रही
कहानियों में
मुद्दतों तक।

* * *

# 22. पुल

ऊपर चलायमान कदम और पहिए
नीचे चलायमान नदी
बीच में निश्चल पुल
वर्षों से असंख्य पदचापों का
अभिलेख संचित कर रहा है चुपचाप।
किसी दिन पुल स्वयं चलायमान हो गया तो?

* * *

# 23. जन्मदिन

तूफानी वेग में भागते रथ से
खडाऊँ गिर जाने पर
ऋतुपर्ण ने सारथी से कहा- "बाहुक, रथ रोको
खडाऊँ गिर गई।"
राजा से मुखातिब होकर बाहुक ने कहा
"सम्राट, इस एक पल में भी हम
हजार योजन दूर निकल चुके हैं।
अब वापस जाना संभव नहीं है।"

* * *

# 24. जल्लाद

हर प्राणदंड में
अपनी मृत्यु का साक्षात्कार करता है जल्लाद
पर वह
जीने के लिए ही इतना क्रूर कार्य करता है।
सदैव
जीवन का सपना देखने वाली आँखों का
मौत को पीना और
उसी में प्राण उलझाकर जीना भी
जीना ही तो है, आखिर।

* * *

# 25. आँखें

अंतर को छूकर
बहने वाले आँसुओं से सिक्त
मानव की आँखें
सबसे हसीन दीखती हैं
उस समय उनमें
नाटक का अभाव होता है।

* * *

# 26. अश्वत्थामा

अपने परिचितों को झूठी खबर देने के बाद
अनजानों को सत्य बताने ही जा रहा था
कहीं से तुम अनायास आ टपके।
उसी क्षण से मैं
अश्वत्थामा बनकर दर-ब-दर
भटक रहा हूँ।

• • •

# 27. समुद्र

बरसाती नदी सूख जाती है
पर समुद्र कभी नहीं सूखता।
यदि सूखना पड़े तो
वह प्रलयंकार के साथ
अपनी जमीन पर
एक हिमालय का सृजन करने के बाद
अपने अस्तित्व को तिलांजलि देता है।

* * *

# 28. ज़मीन

ज़मीन मत छोड़ना, साथी
पाँव रखने के लिए स्थान चाहिए।
पंख होने पर भी चिड़ियाँ
आकाश में डेरा कहाँ डालती हैं?
देखो, बादल भी घर लौटता है
बारिश बनकर।
ज़मीन मत छोड़ना साथी
पाँव रखने के लिए कोई स्थान चाहिए।

* * *

# 29. हिसाब–किताब

चाहत के किनारों पर टकराकर जिंदगी
खुद मजधार बना लेती है
और बहती है अनंत की ओर।
राह में असंख्य शिलाओं पर
अपना इतिहास लिखती बहती है नदी
हॉ, भविष्य इसका
मात्र हिसाब-किताब रखता है।

* * *

# 30. दो टुकड़े चाँद के

आज चाँद के दो टुकड़े हो गए।
एक सड़क पर गिरा
और चिराग बन गया।
दूसरा संसद में गिरा
और आग बन गया।

* * *

# 31. बिटिया

हमारी बिटिया
जब हमारे साथ थी
तो हमने कहा-
पूनम का चाँद
उसके सौंदर्य से लजाकर
आँगन के कुएँ में छुप गया।
हमारी बिटिया
जब हमारे बीच नहीं रही, तो
हमने कहा- पूनम के चाँद ने
हमारी तरह विह्वल होकर
हमारे आँगन के कुएँ में
डूबकर आत्महत्या कर ली।

* * *

# 32. दृष्किोण

झुककर जिंदगी को उठाने के प्रयास में
उसकी आँखों से टपकते आँसुओं की दो बूँदों को
तुमने उठाकर गीतों की माला में पिरो दिया।
वह शहीद हो गई
अभाव के मैदानी जंग में
और तुम पर्याय बन गए नव सृजन के।

* * *

# 33. आँसू और तुम

आँखों की बरौनियों से बरबस टपकते
आँसुओं की बूँदों के साथ
नहीं कर पाया मैं कोई संवाद
और ढुलक पड़े
गालों की राह ज़मीन पर
मौन।
दूर से हाथ हिलाने वाली तुमसे
क्या कर पाऊँगा मैं
कोई संवाद?

* * *

# 34. वसंत

वसंत आया
मेरे आँगन में सुस्ताया-
रात बिताया
पुनः अपना रास्ता ले लिया!
ठंडे चूल्हे में सपने पकाने में व्यस्त हम
उसकी आहट तक सुन नहीं पाए!

* * *

# 35. बादलों का समंदर

इस बार पावस में
आकाश टूटकर
मेरी आँखों में समा गया
बादलों की चादर ओढ़कर।

उसके साथ चाँद और तारे
टूटे क्यों नहीं?
मेरी आँखें अब
बादलों के सागर का
अक्षयपात्र बन गई हैं।

* * *

# 36. सृष्टि का लय

कृष्ण! हृदय से स्खलित होकर
तुम जबसे
पत्थरों पर
अजायबघर के मौन दीवारों पर
और धर्मग्रंथों के आदिम पन्नों में
अंकित हो गए
तबसे
यहाँ हर शाम
बाँसुरी करुण क्रंदन करती है
और इसके साथ बिलखता है
संपूर्ण सृष्टि का लय।

* * *

# 37. अनुमति

छाती के आघाती सबके सब
खंजर और शूल नहीं होते।
छाती पर गिरने वाले सब के सब
बज्र नहीं होते।
देखो तो,
आकाश की छाती को चीरकर
धरती के वक्ष पर गिरने वाली
बारिश की उर्वर बूँदों को!

तुम्हारी अनुमति हो तो
मैं भी बारिश की बूँदें बन जाऊँ।

* * *

# 38. शरीर की भाषा

प्रेमालीन
अर्जुन-उर्वशियाँ
भूकंप से घबराकर
स्वयं को बचाने
सब कुछ छोड़कर
कलेजा मुँह को लिए
खुले सड़क पर निकल गए
और भीड़ में समाहित हो गए।

नग्न और अर्धनग्न तन की
नि:शुल्क प्रदर्शनी में
कोई उत्सुकता शेष नहीं थी
वहाँ कोई तमाशबीन न था
सबके आगे एक ही प्रश्न था
जीवन का बचाव!

* * *

# 39. सीमा

वाघा सीमा के पास खड़े होकर
कूड़ा जलाने वाले एक वृद्ध से मैंने पूछा
"बाबू जी, भारत-पाक सीमा कहाँ पर है?"
मेरी ओर मुखातिब हो, गंभीरता से
दाएँ हात की मध्यमा उंगली से
मेरी छाती को छूते हुए कहा- "यहाँ है।"

उनके दोनों पैर राख की ढेर पर टिके थे।

* * *

# 40. स्वाभिमान का बोझ

गीत बन चुके बुद्ध
और मृगतृष्णा बन चुका सगरमाथा
नि:शब्द उठा रहे हैं
मकड़-जाल में उलझे हमारे
रुग्ण स्वाभिमान का बोझ।
सगरमाथा के निर्माण में एक शिला का सहयोगी
पौरखी हाथ नहीं था कोई
बुद्ध को बचाने एक बूँद पसीना बहाने वाला
परिश्रमी ललाट न मिला कोई।
आज बाजारों में बिक रहा है सगरमाथा
गुम्बा* की झालरों में अंकित अपठनीय अक्षरों में
कैदी बनकर रह गए हैं बुद्ध।

* * *

*गुम्बा- बौद्ध मंदिर

# 41. वर्षा और प्रेम

चट्टान, ढलान और पत्थरों पर
सदा निर्मम पछाड़ खाने के बाद भी
हमेशा उसी निष्ठुर आकाश के
नीले अधर चूमने को उत्सुक
तुम्हारी आदत
गजब की है, वर्षा!
आह! प्रेम।

* * *

# 42. रहस्य

हिम निःशब्द
शून्यता में निहित
महाख्यान सुनाकार चला गया

प्रत्युत्तर में मेरे पास
केवल एक चीख शेष थी।

* * *

# 43. बुद्ध और मैं

जन्म लेते वक्त
हम दोनों ही छोटी-छोटी पृथ्वी थे
वह अपने हाथों से आस-पास की दीवारें तोड़ता
गया
और बुद्ध बन गया
मैं अपने आस-पास दीवारें बनाता गया
और धूल बन गया।

* * *

# 44. एक रस

पिछले साल जब पूरब को गई
तुम मुझे बताकर गई थी।
तुम्हारी जुदाई की
पीड़ा से छटपटाता मैं सोचने लगा
बिन बताए जाती तो अच्छा होता।

इस बार बिना बताए तुम
पश्चिम की ओर गई, तो
मैं सीमात पीड़ित हुआ और सोचने लगा
बताकर जाती हो अच्छा होता।

* * *

# 45. आँधी

आओ, आँधी आओ
दमखम से छा जाओ
तुम जब तक सृष्टि को नहीं झकझोरते,
दिखाते रौद्र रूप
दो चार घर-आँगन नहीं उजाड़ते
तब तक कोई नहीं लिखेगा
नाचीज हवा का इतिहास।

* * *

# 46. चाँद तारों का देश

ज़मीन से उठने वाला संपूर्ण धुआँ
आकाश में ही समा जाता है
पर वह कभी न कहलाया धुआँ का देश
वह सदा से कहलाया चाँद तारों का देश।

* * *

# 47. प्रेम की कविता

लज्जा और निस्सारता की जंग से चूर-चूर होकर
जिस दिन
मेरे दाएँ हाथ की तलवार ज़मीन पर गिर पड़ी
और उद्‌भाषित हुआ एक लघुप्रकम्प
ऐन वक्त पर
मेरे बाएँ हात में स्थित कलम ने
आकाश की ओर भरी एक दिव्य उड़ान
और अंतरिक्ष के मस्तक पर इंद्रधनुष की शिरोरेखा
दे
नीलिमा की शाश्वत स्याही से लिख दी
अमर प्रेम की एक कविता।

* * *

# 48. पहाड़ का चिराग

सुदूर कहीं पहाड़ पर तिल-तिल जलने वाले
उस चिराग से मेरा क्या नाता है?
मेरी आँखें दूर से ही पीती आई हैं
उसकी मंद रोशनी।

आज, उस चिराग के
बुझ जाने के बाद महसूस हुआ
पहाड़ के रास्ते आहिस्ता उतरने वाले अंधकार ने
मेरे मन में डेरा डाल लिया है।

* * *

# 49. भूगोल

मेरे पहाड़ का हिस्सा लेकर
तुम्हारे पास आई नदियों में
नमक के साथ
आँसू और पसीने की बूँदें मिली या नहीं?

अपनी धुन में गगनगामी बना
थोड़ा सा स्वाभिमान हाथ आया कि नहीं?

उस गहरी नद-कंदरा की अंतिम बिंदु पर
मेरे सगरमाथा की प्रतिच्छाया नजर आई कि नहीं?

* * *

# 50. पानी और सपने

रंगहीन पानी के बेरंग कण
ऊपर आकाश में कैसे
रंग-बिरंगी बनते हैं!

नीचे शहर में मनुष्य के
रंग-बिरंगी सपने
दिन-दिन रंगहीन बनते जाते हैं
कैसे?

* * *

# 51. धरहरा*

तुम्हारे पायदान से होकर
तुम्हारे आकाशी गौरव को बेवास्ता करके
तुम्हें केवल निबंधों में कैद कर
अनेक बार गुजरा हूँ उस रास्ते से
देखकर भी अनदेखा करते हुए।
आज जब तुम नहीं हो, सुनधारा में
अब समझ में आया तुम्हारे अस्तित्व का मर्म।

* * *

(*धरहरा: काठमाडू के सुनधारा नामक स्थान पर अवस्थित नेपाल का सबसे ऊँचा मीनार, जो सन् 2015 के भूकप में ढह गया।)

# 52. परिवर्तन

अनेक मौसम के रूप में आने वाला समय
जब आँखों से रोशनी चुराता है, तब
धरती लोहे की बन जाती है- कठोर
पहाड़ और भी अभेद्य बन जाता है- दुर्गम
अपने पराये बन जाते हैं- अजनबी
और जिंदगी
मात्र एक अंकगणित-
एक दिन, दो दिन, तीन दिन-बस!

* * *

# 53. जीवन के फूल

मेरे फेंके हुए भग्न गमले में
अपना आशियाना बनाकर
दो खूबसूरत अंडों को सेती पक्षी ने
एक दिन मुझसे कहा-
तुम जिंदगी की पीठ पर बड़े सपनों की गठरी
लादकर
जब डगर-डगर, टूटते-लंगड़ाते रेंग रहे थे
हम तुम्हारे पग-तल की धूल में
जिंदगी खिला रहे थे।
फगत साँस लेना
जीवन जीना नहीं है, मनुवा!
जीवन जीने के लिए थोड़ी सी कला और
मुट्ठी भर प्रेम चाहिए।

* * *

# 54. स्मृति में गाँव

गाँव में,
जिस बागान में लगते अमरूद और आम,
अपने होते थे, वे सबके होते थे।
आज शहरों में
एक ही घर के कमरे भी
तुम्हारे, मेरे, उसके न जाने किस-किसके हैं
हम और हमारे की अनुपस्थिति में
आज गाँव भीतर ही भीतर पीड़ा दे रहा है।

* * *

# 55. संबंध

बाबू!
सब-के-सब संबंध
केवल मिट्टी और पानी के होते हैं
और तुम स्वयं भी।

उन्हें जल-धारा से
निर्मम भिगो दो-
धुल जाते हैं, बह जाते हैं।
रेला बहा दो और लात मार दो,
मदोन्मत्त पैरों से
भूस्खलन होगा, घर-द्वार बहा ले जाएगा।
प्रेम से भीगो दो, सहला दो स्नेहिल स्पर्श से
घर, उद्यान, कलाकृति और ईश्वर बन जाता है।

हाथ पर हाथ धरे बैठो-
पानी भाप बनकर उड़ जाता है
मिट्टी मरु बन जाती है-
फगत एक निर्जीव, निष्प्राण कब्रस्थान।

* * *

# 56. जिंदगी का पर्यटन

मैं जिंदगी का पर्यटक
कहाँ-कहाँ से नहीं देखा, जिंदगी को!
कभी तेन्जिङ की टोप पर बैठ
सगरमाथा की चोटी से देखा
कभी आर्मस्ट्रंग के मस्तक पर विराज
चाँद से देखा,
इतना ही नहीं
रोएल एमंडसन के तलवे पर चिपककर
देखा हिमदेश से भी।
पर जिंदगी!
जब मैंने तुम्हारी ही अंतिम सीमा से तुम्हें देखा,
तो
सच कहता हूँ-
तुम्हें सबसे हसीन देखा।

• • •

# 57. स्वीकारोक्ति

जानता हूँ
ऐसे ही उथल-पुथल
ज्वालामुखी और प्रलयों से
जन्म लेते हैं पहाड़
जो दृढ़ता के प्रतीक बनते हैं
समय के साथ।

आज-कल मुझे भी
उथल-पुथल
अच्छा लगने लगा है।

* * *

# 58. धैर्य

स्वर्णिम पंखों को लेकर आने वाली
उषा भी
आखिर कलिमा का लिहाफ ओढ़कर
चली गई।

ठहरो!
कहानी का अंतिम पृष्ठ बाकी है।

* * *

# 59. शहर के पड़ोसी

स्वप्नील आँखों को निलाम कर
"सभ्य" शहरिया पड़ोसियों के पास
मैंने लिया एक टुकड़ा जमीन।
जब ब्रह्मपुत्र प्लावन पर उतर आया
तब एक-एक कर पड़ोसी पलायन कर गए
मैं पुन: अकेला रह गया।
इस पावस में मैं
दोबारा "बसाइँ"* पढ़ने की तैयारी में हूँ।

* * *

(*बसाइँ- गुवाहाटी, असम निवासी उपन्यासकार पद्मश्री लीलबहादुर क्षेत्री का एक प्रख्यात उपन्यास, जिसका अर्थ है- स्थानांतरण।)

# 60. सत्य-समर

सत्य-समर में जब तुम आगे बढ़ोगे
तुम्हारे सामने यदि
मैं एक अभियुक्त बनकर खड़ा हूँ,
तो तुम मुझे गोली मार सकते हो
बस, तुम मेरी छाती को बचाना।
इसमें तुम्हारे लिए अगाध स्नेह भरा है
यदि शिथिल होकर तुम्हारे पैरों पर गिर पड़ा,
तो धरती रूपी मुझसे अधिक पीड़ा
आकाश रूपी तुम्हें हो सकती है।
उस क्षण मृत्यु मेरी नहीं,
तुम्हारी हो सकती है।

* * *

# 61. तानाशाह की लाश

समाधिस्थल पर,
दशकों पहले गुजरे तानाशाह की
ताबूत में रखी सुरक्षित
लाश को देखकर
भावविह्वल हो गए उनके अनुयायी।

प्रतिदिन उस लाश को देखते आए हम
बगीचे में गए
और तितलियों के खेल में रम गए।

* * *

# 62. इंडिया गेट

इंडिया गेट पर
क्या तुमने देखा किसी गोर्खा वीर का नाम?
आज उन नामांकित पत्थरों से
टपक रही हैं पसीने और आँसुओं की बूँदें
और निर्मम पछाड़ खा रही है गर्म
लोहे की छाती पर
जिस पर पड़ते ही
भाप बनकर उड़ जाती हैं
अज्ञात आकाश की सूदूर छोर की ओर।

* * *

# 63. टिमटिमाते चिराग का सपना

सूरज वहाँ से ढलकर उत्तर दिशा की ओर गया,
रोशनी से नहा उठा उस दिशा का भूगोल।

चाँद वहीं से ढलता दक्षिण की ओर गया
रोशनी से नहा उठा उस दिशा का भूगोल भी।

बीच में बचा थोड़ा सा लाल
और रात के साथ-साथ उस लालिमा से
अवतरित हुई एक काली छाया।
वह देश आज एक मंद चिराग के
सपने में जी रहा है।

* * *

# 64. परिवर्तन की कहानी

तुम्हारे विज्ञान ने जोड़ा या नहीं
क्षितिज के दो किनारों को
तुम्हारा सर्जिकल कार्ड सिल पाया या नहीं
फटे हुए दिलों को
तुम्हारे आश्वासन की बेलगाम शृंखला
क्या पोंछ पाई आँसुओं की अविरल धार-
बेनाम, विकल आँखों की।
सुदूर अभेद्य गाँव ने अपना
चोला बदला या नहीं
मुझे नहीं मालूम!

पर, जनाब!
आपकी अभियांत्रिकी शान ने
निश्चय ही बदल दिए हैं
इतिहास के पन्ने।
पहले जो श्वेत थे
आज रक्तिम दिखाई दे रहे हैं।

* * *

# 65. युद्ध और मुस्कान

कुदरत की देन मुस्कान पर
अहं का ताला लगाने के बाद
उसका नि:शुल्क विनिमय नहीं कर पाए हम,
मैदान में।
अनगिनत युद्ध लड़े युग-युग तक
और अरबों मुस्कानों की बर्बर हत्या कर दी हमने।

* * *

# 66. ऐसे ली करवट समय ने

ऐसे ली करवट समय ने कि
आज, तारों के बीच द्वंद्व है
शिकायत है-
एक ने दूसरे की रोशनी रोक दी
कहते हैं-
चाँद स्वेच्छाचारी बन गया है
घटता है, बढ़ता है, छिपता है
या कभी निर्लज्ज नंगा होता है।

कहते हैं-
सूरज पराया हो गया है
सबके हिस्से की रोशनी खुद पी रहा है।

तारे धरती का मुँह ताकते हुए
आँसू बहा रहे हैं।
मनुष्य घोषणा कर रहा है-
"मत रोना तारो!
मैं तुम्हारा मसीहा बन जाऊँगा
और सिखाऊँगा तुम्हें
समता का पाठ।"

अरे! दूसरे अंतरिक्ष से
यह कौन अट्टहास कर रहा है?

* * *

# 67. पीड़ा

भूख है, अन्न भी है
पर भूख और अन्न की दूरी
धरती और आकाश के समान होना
पीड़ा का एक महाकाव्य है।

* * *

# 68. वसंत, फूल और हम

मेरे अनुभव में, हर वसंत नया होता है
नये वसंत में खिलने वाले फूल भी नये होते हैं।
केवल हम
स्थायी सूत्र के बंदी
समय को हथेली से रोक पाने का भ्रम
पालते रहते हैं
और कहते हैं-
फिर वही वसंत आया है
फिर वही पुराने फूल खिल उठे हैं।

* * *

# 69. पानी: दो अनुभूतियाँ

मेरी आँखों से
पानी जब मौन बहता गया
मैं कमजोरी का पर्याय बनता गया।
उसी पानी को
रौद्र बरसात में
उफनकर नदी का बाँध तोड़ते देखा, तो आजकल
मैं अपने आँसुओं के भीतर भी
एक भिन्न यथार्थ को आत्मसात करने लगा हूँ।

* * *

# 70. ब्रह्मपुत्र

ब्रह्मपुत्र दूर हो तो
तीर्थ कहलाता है
जब घर में प्रवेश करता है-
तो किस्सा बदल जाता है।

* * *

# 71. तारे और ऊँचाई

आकाश के सभी तारे
सूरज बन सकते हैं, बेटे!
शर्त इतनी है-
कि तुम्हें स्वयं को
वह ऊँचाई प्रदान करनी होगी।

* * *

# 72. दूरी

मुझसे दूर हो, प्रिये
जानता हूँ
पर कोई शिकवा नहीं है
क्योंकि, दूर के सूरज को देख कर ही यहाँ
जी रहे हैं सभी
युगों से।

* * *

# 73. अनुरोध

नदी किनार पर खड़ी होकर
यह मत कहो प्रिये
कि बाँटने पर समाप्त हुआ है
तुम्हारा सर्वस्व।

* * *

# 74. बूँद

गर्म रहते ही
गिर जाने दो मुझे
बह जाने दो।
कहीं जम गई, तो
ओला बन जाऊँगी,
ओला बनने के बाद
कहानी अलग होगी।

* * *

# 75. धुन

बाँसुरी को तोड़ने पर
कहाँ टूटती है धुन!
पूरे झुरमुट की सरसराहट में
अनूदित होकर आती है
खंडित ग्लानि का
महाकाव्य सुनाने।

* * *

# 76. अकेलापन

एकाकीपन से आक्रांत मैं
नदी किनारे पहुँचा।
नदी की अर्थहीन कल-कल
सागर की लहरों का एकांत गीत
पृथ्वी की एकल-यात्रा
सूरज अकेला, चाँद अकेला
उफ! एकाकीपन भी एक सिद्धांत है।

मैं घर लौट आया।

* * *

# 77. भार

नहीं चाहता मैं, मेरी हथेली पर
चाँद तारे गिरे
वे दूर से ही अच्छे लगते हैं।
गिर भी जाए तो,
कहाँ उठा पाएँगी मेरी ये हथेलियाँ-
जो पसीने और आँसुओं की लघु बूँदों की भार से
सदा मिट्टी की ओर झुकी रहती हैं।

* * *

# 78. अंतिम युद्ध

जीवन के अंतिम युद्ध में
एक दूजे के खून के प्यासे हम
खड़े हो गए आमने-सामने
एक दूसरे की हत्या करने।
जब बोध हुआ अब केवल हम दो ही जीवि
तनी तलवारें स्वत: धरती पर गिर पड़ी
और हम आलिंगनबद्ध होकर
रोने लगे, अविराम
बालकों की तरह।

* * *

# 79. अंधेरे की फसल

संसार में उजाले का अभाव है-
यह सत्य नहीं है।
दरअसल
आग्रह के पर्दे की आड़ में हम
अंधेरे की रबी-खरीफ फसल उगाते हैं
और निरंतर अंधेरा ही संचय करते हैं-
खेतों में, खलिहानों में।
रात भर जुगनू और तारे
हमारी दृष्टिहीनता की कहानी बयाँ करते हैं
पूरे आकाश में और भूमंडल में।

* * *

# 80. मेरी—उसकी गौरैयाँ

जब मैंने अपना घर बेच दिया
जमाबंदी लिखी, हस्ताक्षर किए
साक्षी के साथ, नगद की गिनती हुई।
लेकिन कैसे-
मेरे घर की छत पर
आशियाना बनाकर
कई संतानों की
परवरिश करने वाली गौरैयाँ
बिना किसी दस्तावेज के
चुपचाप क्रेता की हो गई!!

* * *

# 81. विजेता

तलवार से जल-थल फतह करने के बाद
समुद्र-तट पर खड़े होकर विजेता ने
आत्म-जयगान में किया सिंह गर्जन!
अपने गर्जन-गीत में मस्त समुद्र
आधा कोश दूर
लहरों पर आरुढ़
मछली पकड़ते मछुआरे
किसी ने भी नहीं सुनी
विजेता की हुंकार-ध्वनि!

* * *

# 82. धरती

मैंने तुम्हें "धरती" पुकारा
तुमने बुरा माना क्योंकि
तुम इब्सन* को पढ़ चुकी हो।
पता है-
मेरी फूँक से यदा-कदा
तितर-बितर होने वाली धूसर धूल
वसंत में आड़ू के कठोर बीज को
अपनी माखनी मिट्टी से आहिस्ता तोड़कर
उसके अंदर से कैसे हरियाली को जन्म देती है!!

* * *

(*इब्सन— हेनरिक जोहान इब्सन (1828-1906) नार्वे के प्रमुख नाटककार जिनके कारण आधुनिक यथार्थवादी नाटकों का जन्म हुआ।)

# 83. सपनों की वैधानिकता

आज तुमने पूछा-
मेरे ख्वाबों की वैधानिकता क्या है?

तुम इस बात से रू-ब-रू हो-
दोनों ओर पहाड़ के समान खड़ी
जीर्ण दीवारों के बीच में से होकर
पाटन* की इन सँकरी गलियों से गुजरते वक्त
तुम्हें नवजात शिशु के रोएँ से भी झीना
विश्वास ही आगे बढ़ाता है-
कि इस वक्त कोई भूकंप नहीं आएगा
और दीवारों से दबकर मेरी मृत्यु नहीं होगी।
कितनी है
इस विश्वास की वैधानिकता?

* * *

(*पाटन- नेपाल का एक प्राचीन शहर जो 2015 में आए भूकंप में बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था।। वर्तमान में इसे ललितपुर कहा जाता है।)

# 84. प्रश्न

तिस्ता की लहरों को
हथेली से रोककर बाँध बनाना
उस पानी में लहरों से विकृत
अपना प्रतिबिंब देखना,
छाया और इस यथार्थ के बीच की दूरी को
साँसों की ताकत से खींचना
और खींचते ही जाना-
इसी का नाम जीवन है, शायद।

उस छाया और इस यथार्थ के बीच
दूरी कितनी है, बताओ?

* * *

# 85. मैं तुमसे प्रेम करता हूँ

हजारों जन्म पूर्व, एक दिन
सार्वजनिक करने के ध्येय से
सगरमाथा की हिमाच्छादित दीवार पर
मैंने अपने लहू से
बड़े अक्षरों में लिख दिया-
"मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"
समय के साथ
पिघला हिम और पानी के संग
बहता हुआ लहू
तराइयों और पहाड़ी ढलानों में
लाली गुराँस बनकर खिल उठा
और आज तक खिल रहा है
हमारे प्रेम की निशानी बनकर।

* * *

# 86. कपास

कसम से,
मैं नहीं जानता था-
इन पहाड़ी ढलानों पर आँसुओं से सींचकर
मैं जो स्फटिक शुभ्र कपास उगाता हूँ
वह शहर पहुँचने के बाद
कहीं आग के समान लाल रूमाल बन जाता है,
कहीं रात के समान काली पट्टी,
तो कहीं
शकुनी-हृदयों के अंधकार का आवरण बन जाता है।

रंगहीन अवस्था में, अधिकतर यह
विधवाओं का विरह गीत बन जाता
वा हताश हृदयों का परिधान बनता है
अगर कुछ नहीं तो, मेरे रक्त से सींचित
यह श्वेत कपास
बेजानों का कफन बन जाता है।

* * *

# 87. भूस्खलन

इतिहास में
हजारों वर्ष पहले
किसी कंदरा से प्रतिध्वनित एक आवाज
अत्यंत क्षीणावस्था में मेरे करीब आकर
फुसफुसाते हुए कहने लगी-
''यह धारणा मत पालना कि
तुमने जमीन पर पॉव रखे हैं
इसलिए भूस्खलन नहीं होगा।
सावधान!''

* * *

# 88. जीवन के माली

सृष्टि पर आक्रमण करने
कोई तानाशाह
जिस पल अपने क्रूर कदम उठाता है
उसी पल
उसके पैरों से रौंदी ज़मीन को सहलाकर
गुलाब खिलाते हैं
जीवन के माली।

* * *

# 89. पटाक्षेप

मैंने बहुत कुछ बनकर देखा
जीवन के रंगमंचों पर
अनेक अभिनय करके देखा,
पर
जब-जब आहत हुआ
तुम्हारी गोद तलाशता रहा
अब अंतिम बार अपना आँचल बिछा दो धरती माँ
मैं विश्राम कर लूँगा
फिर सदा के लिए मैं तुम बन जाऊँगा।

* * *

# 90. मुस्कान की खेती

सुदूर क्षितिज के कंठ पर
इंद्रधनुष का हार देखकर
स्वर्ण का सपना देखने वाला मेरा गाँव
तुम्हारी हजार असंतुष्टियों का उत्तर
एक ही अबोध मुस्कान से दे सकता है।

* * *

# 91. उम्र

नदी बहती रही-
मैंने तट पर पड़े एक शिला पर अपना नाम लिख दिया
और दावा किया अपने अस्तित्व का।

आज भी तट वहीं पर है,
मेरा नाम भी शिला पर अस्पष्ट अंकित है
पर, मैं नहीं हूँ।

मैं उसी तट पर बह रहा हूँ
पर वापस आने में अक्षम हूँ।

* * *

# 92. गृह-कलह

गृह-कलह के बाद
चौराहे पर तपित वट-पीपल के बीच
मैंने दीवार बना दिया
सुलह होने पर
दीवार को तोड़ दिया
पर, कुछ पत्थर संचय कर रख आया हूँ,
पास ही।

* * *

# 93. गहराई

तुम हिमालय हो, सलाम!
और मैं ज़मीन का पानी।
यह जानता हूँ-
तुम्हें गगनचुंबी बनने और ऊँचाई चाहिए।
लेकिन मैं सीमित गहराई में ही
अपने भीतर तुम्हारी संपूर्ण ऊँचाई को
प्रतिबिंबित कर सकता हूँ।

* * *

# 94. लालसा

लालसा पंख फैलाए उड़ने लगी आकाश में
उसे पाने की ख्वाहिश में
मैं उसकी छाया का पीछा करता गया
जब उसने क्षितिज को छुआ
मैं ज़िंदगी के किनार को छू रहा था
हमारा मिलन कभी हो न पाया।

* * *

# 95. सत्य कथा

और अंत में
मकड़ी के जाल की
क्षीण-तंतु को थामकर ही सही
जिंदगी का गीत गाया उसने
फिर हँसते-हँसते आँखें मूँद ली।

सोने के झूले में झूलना ही
जीवन का मकसद मानने वाले
आज नत शीश होकर
उसका इतिहास पढ़ते हैं।

* * *

# 96. शहीद की विधवा

बेटे!
तुम्हारे पिता ने अपना लहू बहाया
ज़मीन लाल नजर आई
वे शहीद कहलाए।

मैंने जीवन भर ऑसू और पसीना बहाया
नहीं दीखा ज़मीन पर कोई चिह्न
मैं पागल कहलाई।

* * *

# 97. अभिलेख

पृष्ठ-पृष्ठ जिंदगी
प्रतिदिन सूरज के साथ
दूर क्षितिज के पार, कहीं फिसल रही है।

मात्र जिल्द बनकर रहने वाले हम
अब भी पूरब की ओर देख रहे हैं
और शेष जिंदगी के छापेखाने से
जिल्द में ही सही, मुद्रित कर रहे हैं
बकाया हिसाब के कागजातों का
एक बेतूका अभिलेख।

* * *

# 98. हक

बेटा! यहाँ जन्म लेने के लिए भी शायद
अनूकूलता या प्रतिकूलता का चिंतन करना चाहिए था
पर तुमने जन्म ले लिया।
हमारी मुस्कान
सदैव कर्ज होती है
लेकिन आजकल के साहूकार बड़े निष्ठुर हैं
तुम रो लो,
आँसू पर तुम्हारा पूरा हक है
यह तुम्हारा पुस्तैनी जागीर है
तुम्हारे आँसुओं से धरती कभी जूठी नहीं होगी।

* * *

# 100. दीवाली और सपना

सपना देखा-
दीवाली में
दीयों से उठकर रोशनी
आहिस्ता हर मानव मन में दाखिल हुई
और सब बुद्ध बन गए।
अतियथार्थवाद के किनारे से
फिसलकर मेरा सपना
स्वैरकल्पना के चट्टानों पर
निर्मम पछाड़ खाने लगा-
जब यह आभास हुआ, तो
उसी क्षण मेरी नींद टूट गई।

मेरी आँखों में आँसू थे।

* * *

# 101. हार-जीत

सगरमाथा पर
अर्जुनदृष्टि से आगे बढ़ने वाले
विजयी हुए।

कभी सगरमाथा
और कभी हस्तरेखाओं को देखकर
मौसम से शिकायत करने वाले
पराजीत हुए।

* * *

# 102. जाति

चौराहे पर पड़े
समय के आइने में
भिन्न होने पर भी
हम दोनों के चेहरे
समान सुंदर दीख रहे रहे थे।

नेपथ्य से किसी ने मारी गुलेल?
चूर हो गया दर्पण हजार टुकड़ों में
अब हमारे चेहरे अनगिनत हो गए
क्षत-विक्षत।

* * *

# 103. आज का दिन

भोर का आहट पाते ही
पंख फैलाए श्वेत परिंदों से
आकाश ढँक जाता है
बीच-बीच में कुछ लाल
पक्षी भी नजर आते हैं
और ज़मीन पर-
सबकी काली छाया।

अभी सूर्योदय हुआ नहीं है,
फिर कहाँ से आई यह काली छाया?

* * *

# 104. मानवता

बेचारी मानवता
लटकी है सूखी फुनगी पर
और पूरे वेग से बह रही है
चैत की तूफानी हवा।

नीचे गहरी नदी है
ऊपर अभेद्य आकाश।

केवल बच्चे हैं पास
अपनी नन्हीं हथेलियों को खोले
झंझा रोकने का करते प्रयास।

सूरज ढल चुका है
गाँव में गाढ़ा अंधकार फैल रहा है
अब बच्चों को घर जाना है।

उस मानवता का क्या होगा?

* * *

# 105. चाँद

आधा हो
एक-चौथाई या दशांश
चाँद सजाता है सदा रोशनी से अपना चेहरा।
इसका वृहत हिस्सा तममय क्यों न हो
फिर भी शेष रोशनी को देखकर हम कहते हैं-
वह चाँद है।

* * *

# 106. ध्यान

सब ध्यानावस्थित थे मंदिर में
वह अष्टसिद्धि के अंतिम पड़ाव पर था
वे शिवलिंग के विराट स्वरूप से वशीभूत थीं
और बच्चे
मंदिर के प्रवेश द्वार के पास
भूख से रो-रोकर बेहाल बेहोश पड़े थे
ज़मीन पर।

* * *

# 107. आँखों का प्रेम संवाद

एक आँख दूसरी से कहती है
'इतनी नजदीक हो प्रिये
मैंने संसार को देखा, पर
तुम्हें कभी देख नहीं पाई।
पर
पता है
जब-जब तुम रोई
मैं भी मौन आँसू बहाती रही।
नासिक पर्वत का अलंघ्य भूगोल
हमारे मिलन में दीवार तो है
पर हमारे प्रेम में दीवार कहाँ बन पाया!!

* * *

# 108. सबूत

सत्य थी मेरी मुस्कान
पर न्यायाधीश ने अदालत में
मुस्कान की सत्यता का सबूत माँगा।
तुम तब तक
अपने होंठ बदल चुकी थी, पर
न्यायाधीश नें इसका कोई सबूत नहीं माँगा।

* * *

**अनुवादक परिचय :**

**डॉ. गोमा देवी शर्मा ( अधिकारी )**

हिंदी एवं नेपाली साहित्य में स्नात्कोत्तर, प्रथम श्रेणी (हिंदी में दो स्वर्ण पदक के साथ), बीएड एवं पीएचडी ( भारतीय नेपाली साहित्य का विश्लेषणात्मक इतिहास )।

वर्तमान- विभागाध्यक्षा, हिंदी विभाग, एपीएस नारंगी, गुवाहाटी।

पता- दलबारी, सातगाँव, गुवाहाटी, असम, इमेल -gomaadhikaris@gmail.com

**प्रकाशित रचनाएँ :**

(i) नेपाली भाषा र संस्कृति- 2012
(ii) मणिपुरमा नेपाली साहित्य- एक अध्ययन- 2016
(iii) आतुर शब्द- (संयुक्त हिंदी कविता संकलन)- 2018
(iv) भारतीय नेपाली साहित्यको विश्लेषणात्मक इतिहास- 2018
(v) पूर्वोत्तर काव्यसृजन -(संयुक्त हिंदी कविता संकलन)- 2019
(vi) साहित्य लहर- हिंदी कविता संकलन (संपादन)- 2021
(vii) 21 श्रेष्ठ लोककथाएँ, असम- संपादन- 2021
(viii) शून्य प्रहर का साक्षी- (कविता संकलन, अनुवाद)- 2022
(ix) भारतीय नेपाली साहित्य का विकासक्रम- (हिंदी प्रकाशोन्मुख)

**संलग्नता :**

(i) व्यवस्थापक - गोर्खा ज्योति प्रकाशन
(ii) संरक्षक -त्रिगुण फाउंडेसन, मणिपुर
(iii) अध्यक्ष-पूर्वोत्तर हिंदी साहित्य अकादमी, मणिपुर इकाई
(iv) अध्यक्ष -वरिष्ठ नागरिक काव्य मंच, असम
(v) आजीवन सदस्य -आगमन साहित्य परिवार
(vi) हाम्रो स्वाभिमान - अध्यक्षा, कामरूप जिला, गुवाहाटी

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में हिंदी, नेपाली और अंग्रेजी भाषा में दर्जनों लेख प्रकाशित
आकाशवाणी मणिपुर तथा गुवाहाटी से दर्जनों रेडियो वार्ताएँ प्रसारित

**प्राप्त सम्मान :**

(i) पूर्वोत्तर हिंदी साहित्य अकादमी सम्मान (2015)
(ii) गोर्खा ज्योति साहित्यिक सम्मान (2016)
(iii) आगमन सम्मान (2019)
(iv) शहीद निरंजनसिंह छेत्री सम्मान (2021)
(v) महकवि तुलसीदास अंतर्राष्ट्रीय सम्मान (2021)
(vi) महर्षि वेदव्यास सम्मान - 2021
(vii) Teachers' Excellence Award - 2021
(viii) लेखक सम्मान -असम सरकार, 2021